Revision Classes on Teaching of Social Studies, [B.Ed I st year Session (2019-21)]

प्रश्न 1 → सामाजिक अध्ययन का अर्थ स्पष्ट कीजिये तथा परिभाषित कीजिये। सामाजिक अध्ययन की प्रकृति एवं क्षेत्र की संक्षिप्त विवेचना कीजिये।

उ० → सामाजिक अध्ययन का अर्थ (meaning of social studies)

सामाजिक अध्ययन का शाब्दिक अर्थ- "मानवीय परिपेक्ष्य में समाज का अध्ययन।" यह एक ऐसा विषय है जिसमें मानवीय सम्बन्धों तथा समाज के विभिन्न दृष्टिकोणों की जानकारी प्राप्त होती है

सामाजिक अध्ययन की अवधारणा को स्पष्ट करने के लिये अनेक विद्वानों ने अपने विचार प्रकट किये हैं

(1) जे० एफ० फोरेस्टर के अनुसार, "सामाजिक अध्ययन जैसा कि इसके नाम से स्पष्ट है, समाज का अध्ययन है और इसका मुख्य उद्देश्य विद्यार्थियों को उस संसार को समझने में सहायता प्रदान करना है जिसमें उन्हें रहना है ताकि वे उसके उत्तरदायी सदस्य बन सके। इसका ध्येय विवेचनात्मक चिन्तन तथा सामाजिक परिवर्तन की तत्परता को प्रोत्साहित करना, सामान्य कल्याण के लिये कार्य करने की आदत को विकसित करना,

इसरी संस्कृतियों के प्रति प्रशंसात्मक दृष्टि कोण रखना तथा यह अनुभव करना है कि सभी मानव तथा राष्ट्र एक दूसरे पर आश्रित है।"

(2) जोरोलिमिक के अनुसार, "सामाजिक अध्ययन मानवीय सम्बन्धो का अध्ययन है।"

(3) एम० पी० मोफट के अनुसार → "जीने की कला बड़ी सुन्दर कला है, सामाजिक अध्ययन द्वारा ही यह ज्ञान प्राप्त होता है।"

(4) यू० एस० ए० परिषद् के अनुसार, "सामाजिक अध्ययन मानव समाज, संगठन तथा विकास से सम्बन्धित है।"

(5) जेम्स हामिंग के अनुसार, "सामाजिक अध्ययन ऐतिहासिक, भौगोलिक तथा सामाजिक सम्बन्धों तथा अन्तसम्बन्धों का अध्ययन है।"

सामाजिक अध्ययन की प्रकृति (Nature of Social studies)

→ सामाजिक अध्ययन दो शब्दों के मेल सामाजिक + अध्ययन से बना है। इसमें सभी सामाजिक क्रियाओं का अध्ययन किया जाता है। इससे तात्पर्य है समाज का, समाज के लिये, समाज द्वारा अध्ययन। अध्ययन शब्द से तात्पर्य है प्राप्त ज्ञान को व्यावहारिक रूप से जीवन में प्रयुक्त करना।

→ इस प्रकार हम कह सकते है कि सामाजिक अध्ययन मानव के सभी दृष्टिकोणों का सम्पूर्ण अध्ययन प्रस्तुत करता है जो मानव सभ्यता के विकास की श्रृंखला समझा जाता है। इसका स्वरूप जटिल, विशाल तथा व्यापक है। इसमें सभी सामाजिक संस्थाओं व संगठनों के विकास का अध्ययन किया जाता है

→ इसमें मानव जीवन के भूत, वर्तमान तथा भविष्य का अध्ययन किया जाता है इसमें सभी विषय राजनीतिशास्त्र, समाजशास्त्र, अर्थशास्त्र, इतिहास, भूगोल के आधारभूत सिद्धान्तों का अध्ययन किया जाता है।

इस प्रकार यह एक अन्त: अनुशासित विषय है, जिसकी सामग्री मानव ज्ञान एवं अनुभवों पर आधारित है।

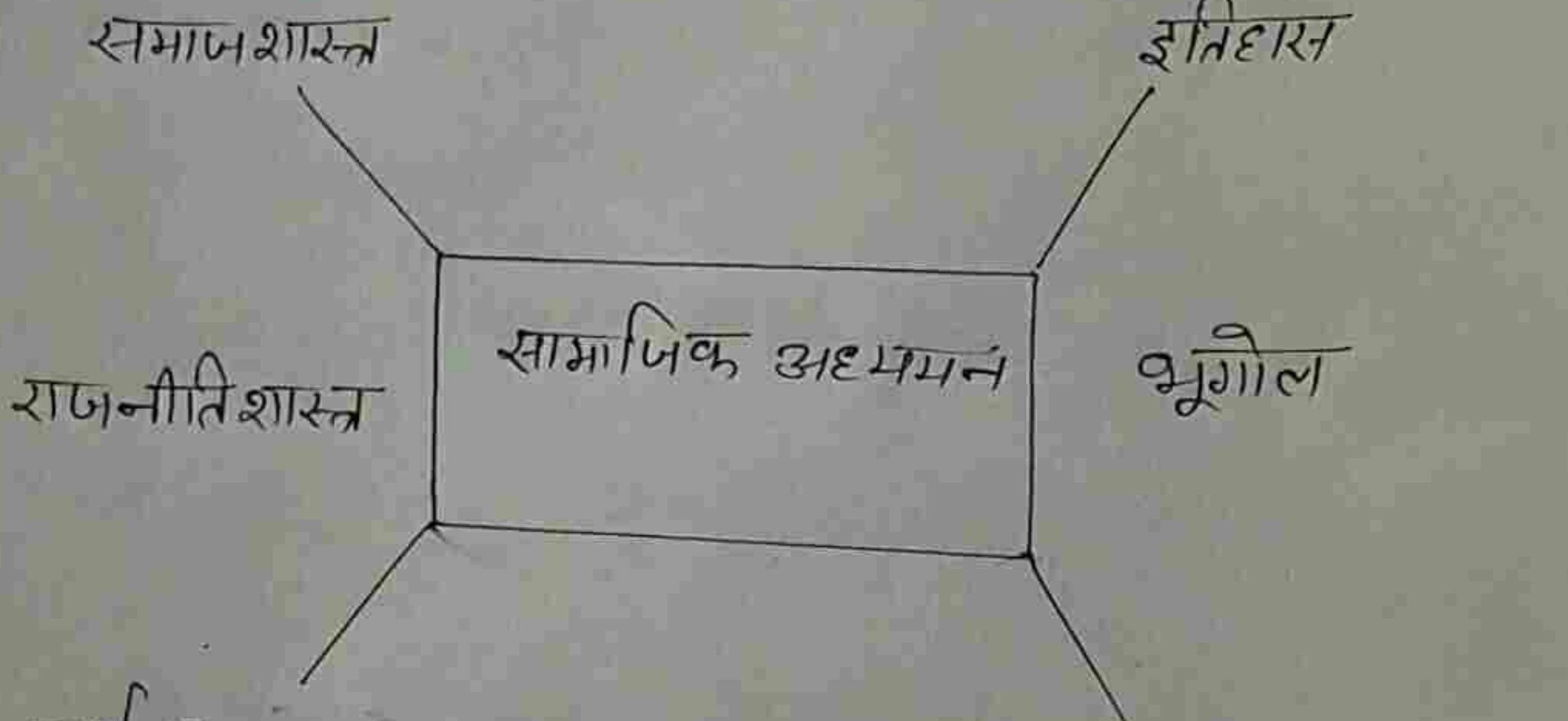

सामाजिक अध्ययन का क्षेत्र (Scope of social studies)

सामाजिक अध्ययन का क्षेत्र बहुत व्यापक एवं विस्तृत है इसमें इतिहास, भूगोल, नागरिकशास्त्र अर्थशास्त्र, समाजशास्त्र आदि सामाजिक विज्ञानों से विषय-वस्तु ली जाती है।

निकलसन राइट के अनुसार, — "वस्तुत: इसका क्षेत्र सम्पूर्ण विश्व में मानव का वर्तमान सामाजिक जीवन अत्यन्त व्यापक है और ही इसका मूल है।"

इसके क्षेत्र के अन्तर्गत निम्नलिखित तथ्यों का अध्ययन किया जाता है—

(1) मानवीय सम्बन्धों का अध्ययन

समाज के समस्त अंगो के साथ मनुष्य के सम्बन्धों का अध्ययन ही सामाजिक अध्ययन का क्षेत्र है। मनुष्य का समाज के दूसरे लोगो से क्या सम्बन्ध है तथा उसका विभिन्न संस्थाओं से क्या सम्बन्ध है? इन सबका अध्ययन इसके क्षेत्र की सीमाओं मे ही है इन सभी को सही ढंग से समझने और इन सम्बन्धो में घनिष्ठता तथा सामजस्य लाने के लिए सामाजिक विज्ञानो एवं मानवशास्त्रो को इसमें सम्मिलित करते है, जैसे - इतिहास, भूगोल, नागरिकशास्त्र तथा समाजशास्त्र आदि।

(2) मानव-निर्मित संस्थाओं का अध्ययन

जैसे - जैसे सभ्यता का विकास हुआ मनुष्य ने विभिन्न सामाजिक संस्थाओ (राज्य सरकार तथा अनेक अन्य समुदायो) का निर्माण किया

(3) नागरिकता के गुणों का विकास

सामाजिक अध्ययन के क्षेत्र में समावेशित विषय-वस्तु से हमें में नागरिक गुणों का विकास होना है। हम में अपने कर्तव्यों के प्रति जागरूकता, सहानुभूति पारस्परिक सहयोग सहनशीलता तथा अनुशासन आदि गुणों का विकास होना है।

(4) अन्तरराष्ट्रीय सम्बन्धों का अध्ययन

आधुनिक युग अन्तरराष्ट्रीय का युग है। वर्तमान में अन्तरराष्ट्रीयता के बिना कोई भी देश विकास नहीं कर सकता। इरसंचार विश्व व्यापार तथा मानव कल्याण परियोजनाओं की सफलता भी अन्तरराष्ट्रीय सम्बन्ध के बिना असम्भव है

(5) समाज से सम्बन्धित अध्ययन - सामाजिक अध्ययन के अन्तर्गत समाज के हर पहलू का अध्ययन किया जाता है।

(6) अतीत पर आधारित घटनाओं का अध्ययन → अतीत (भूतकाल) में घटने वाली सामाजिक घटनाओं का आने वाले समय पर अवश्य ही प्रभाव पड़ता है।

(7) प्राकृतिक विज्ञान तथा विकास का अध्ययन प्रकृति मनुष्य के शिक्षक के रूप में भी देखते है।